पाश की कविताएं

रात से

उदास बाजरा, सिर झुकाए खड़ा है
तारे भी बात नहीं करते
रात को क्या हुआ है...
ऐ रात, तू मेरे लिए उदास न हो
तू मेरी देनदार नहीं
रहने दे, इस तरह न सोच
जुगाली करते पशु कितने चुप हैं
और गांव की स्निग्ध .फिजा कितनी शांत है
रहने दे, रात, तू ऐसे न सोच, तू मेरी आंखों में झांक
ये उस बांके यार को अब कभी न देखेंगी
जिसकी आज अख़बारों ने बात की है...
रात! तेरा उस दिन का रंग कहां है?
जब वह पहराड़ी चो के जल की तरह
जल्द-जल्द आया था
चांदनी की लौ में पहले हम पढ़े
.फिर चोरों की तरह बहस की
और .फिर झगड़ पड़े थे
रात! तू तब तो खुश थी
जब हम लड़ते थे
तू अब क्यों उदास है
जब हम बिछुड़ गए हैं
रात, तुझे जाने वाले की कसम
तेरा यूं उदास होना बनता नहीं है
मैं तेरा देनदार हूं
तू मेरी देनदार नहीं
रात, तू मुझे बधाई दे
मैं इन खेतों को बधाई देता हूं
खेतों को सब पता है
आदमी का लहू कहां गिरता है
और लहू का मोल क्या होता है
यह खेत सब जानते हैं
इसलिए ऐ रात!
तू मेरी आंखों में देख
और मैं भविष्य की आंखों में देखता हूं।

अर्थों का अपमान

आपने जानबूझकर अर्थों का अपमान किया है
आवारा शब्दों का इल्ज़ाम
अब किसे देंगे?
मुझसे यह वृक्ष पूछते हैं
कि उस सूरज को क्या कहें
जो कि गर्म न हो
जिसका रंग लाल न हो!
मैं वृक्षों की ओर देखता हूं
हवा के रंग गिनता हूं
और ऋतु का माप लेता हूं
और मुझसे .फिर सूरज को निर्दोष नहीं कहा जाता
मैं सूरज के लिए
गुस्ताख शब्दों के स्वयंवर में बिठाता हूं
आप समझेंगे
मैंने चोटी पर खड़े हो खड्ड में छलांग लगाई है
असल बात दूसरी है
मैंने तो खड्डों के अर्थ बदले हैं
हवा को पींग माना है
और पर्वत को ऊंची छलांग लगाने की जगह माना है
मैंने आपके लिए आत्महत्या के अर्थ बदले हैं
मेरे साथी,
आपके लिए ज़िंदगी के अर्थ बदलेंगे
आपने गर मरते वक्त
ज़िंदगी को जान भी लिया
आपको कौन मानेगा?
आपको कौन छोड़ेगा
जिन्होंने जानबूझकर
अर्थों का अपमान किया है।

पाठक मंच

मज़दूर मोर्चा का नया अंक मिला। इस अंक में हरियाणा चुनाव संबंधी विश्लेषण से काफ़ी जानकारी मिली। महाराष्ट्र में राज ठाकरे के नेतृत्व में महाराष्ट्र नवनिर्माण सेना द्वारा जैसा घिनौना खेल खेला जा रहा है, उसकी जितनी निंदा हो, कम ही होगी। लेकिन सवाल है कि सिर्फ़ निंदा से भी क्या होने वाला है। जब तक जनता इन संगठनों के ख़िलाफ नहीं उतरती, तब तक ये तथाकथित राजनीतिक नेता जो एक गुंडे से बढ़ कर नहीं हैं, फलते-फूलते रहेंगे और घृणा की राजनीति को हवा मिलती रहेगी। अबू आजमी भी कोई जनहितैषी नेता नहीं है, पर इन सैनिकों के समान गुंडागर्दी की राजनीति वह नहीं करता। जहां तक आदिवासियों द्वारा नक्सलवाद को अपनाये जाने का सवाल है, उनके लगातार होते शोषण को देख कर इसे ग़लत नहीं कहा जा सकता। आज तक सबों ने आदिवासियों का शोषण ही किया है और अब उन्हें जंगलों से खदेड़े जाने की बात की जा रही है। ऐसी हालत में आदिवासियों के समक्ष हथियार उठा लेने के अलावा संभवत: और कोई विकल्प नहीं बचा है। अंक में प्रकाशित अन्य लेख भी पसंद आये। पत्रकारिता की गुणवत्ता कम होते जाने के जो कारण आपने बताये हैं, वे पूरी तरह सही हैं। आज योग्य लोग़ों का पत्रकारिता के क्षेत्र में अभाव होता जा रहा है, क्योंकि इस क्षेत्र में पैसे तो कम मिलते ही हैं, जैसा वातावरण बना हुआ है, उसमें घुटन की स्थिति बन जाती है। अगले अंक का इंतजार है। उम्मीद है कि मज़दूर मोर्चा की धार तेज़ होती जायेगी।

- श्रीराम सिंह, गुड़गांव

मज़दूर मोर्चा का नया अंक मिला। सामग्री प्रासंगिक और बेहतर है। इस पत्र द्वारा मैं नगर निगम के अधिकारियों का ध्यान आवारा पशुओं द्वारा उत्पन्न की जाने वाली समस्याओं की तरफ़ दिलाना चाहता हूं। यद्यपि आपने भी इस समस्या पर काफ़ी लिखा है, पर नगर निगम के अधिकारी कानों में तेल डाल कर बैठे हैं। आवारा पशु यातायात के संचालन में समस्यायें तो खड़ी करते ही हैं, कालोनियों की सड़कों पर जमावड़ा लगा कर आने-जाने वाले लोग़ों के लिए भी समस्यायें पैदा कर देते हैं। नगर निगम सिर्फ़ इस बात के आंकड़े जारी करता रहता है कि उसने कितने पशु पकड़े, पर पकड़े तो कहां से पकड़े और उन्हें कहां रखा, इसकी कोई जानकारी नहीं मिलती। अगर पशु पकड़े जाते हैं तो कहां जाते हैं? इस सवाल का कोई जवाब नहीं है।

- राजबीर, फरीदाबाद

मज़दूर मोर्चा का अंक मिला। पूर्व के अंकों की भांति यह अंक भी काफ़ी अच्छा है। विधनसभा चुनाव के बाद का विश्लेषण काफ़ी अच्छा लगा। दरअसल, आज राजनीति में विकल्प का अभाव हो गया है। यही कारण है कि विपक्ष कमज़ोर हो गया है। जनता की यह मानसिकता बन गई है कि सभी राजनीतिक दल और नेता एक ही जैसे हैं। कोई भी शासन करे, फर्क पड़ना नहीं है। इसीलिए वे गठबंधनों को छोड़ कर पहले से सत्ता में बने रहे लोग़ों को मत दे देते हैं। केंद्र में कांग्रेस के पांव जमने और फ़िर हरियाणा में इसके सत्ता में आने के पीछे वास्तविक कारण ये ही हैं। राष्ट्रीय स्तर पर अथवा राज्य स्तर पर ऐसी कोई पार्टी नहीं दिखती जो कांग्रेस से अलग एवं जनपक्षधर राजनीति करने वाली हो। सभी राजनीतिक दलों का एक ही मकसद रह गया है अधिक से अधिक जनता की लूट-खसोट। इसलिए जनता किसी दल पर ऐतबार नहीं करती। अंक में प्रकाशित दूसरे लेख अच्छे लगे। व्यंग्य बहुत ही सुंदर है। यह प्रसिद्ध व्यंग्यकार हरिशंकर परसाई द्वारा लिखा गया है। भूलवश आपने उनका नाम नहीं छापा। अगले अंक का इंतज़ार है।

- रामकुमार शर्मा, फरीदाबाद

पृष्ठ 1 का शेष

हूडा कमिशनर आए तो, पर देखा क्या?

सन् 1970-71 में इन्होंने अपना पूरा मकान बनाकर कम्प्लीशन सर्टीफिकेट भी ले लिया था। कानूनी तौर पर उनके ऊपर हूडा की कोई देनदारी नहीं बनती। उन्होंने फ़िर भी सुनिश्चित करने के इरादे से 'कोई बकाया नहीं' का प्रमाण पत्र लेने का आवेदन कर दिया। करीब एक माह बाद 'हूडा' से जवाब आया कि आवेदन पत्र पर किए गए हस्ताक्षर आवेदक के हस्ताक्षर से नहीं मिलते। हूडा से कोई पूछने वाला नहीं कि 40-45 वर्ष पूर्व किए हुए हस्ताक्षर जरूरी नहीं कि मिल ही जाएं और फ़िर हूडा ने कौन सा नकदी का भुगतान करना है जो हस्ताक्षर मिलाने पर इतना ज़ोर दिया जा रहा है। अपने पत्र में हस्ताक्षरों को मुद्दा बनाने की बजाए यदि असल काम की बात लिख देता तो क्या आफ़त आ जाती? लेकिन असल काम इतनी आसानी से हो गया तो फ़िर उनकी दिहाड़ी कैसे बनेगी?

इसी तरह 14 सेक्टर निवासी ने भी इसी तरह का प्रमाण पत्र मांगा जो उसे नगर निगम से अपना कम्प्लीशन सर्टिफ़िकेट प्राप्त करने हेतु देना था। इसके जवाब में हूडा ने लिखा कि पहले कम्प्लीशन सर्टिफ़िकेट लाओ तब वह अपना 'कुछ बकाया नहीं' का प्रमाण पत्र जारी करेंगे। अब कर लो बात। नगर निगम तब तक सर्टिफ़िकेट जारी नहीं करता जब तक हूडा वाले अपना सर्टिफ़िकेट न दे दें और हूडा वाले कहते हैं कि पहले उनसे ले कर आओ। यानी की पहले अंडा या मुर्गी वाली बात हो गई। लेकिन समाधान बड़ा सरल है। दोनों बाबुओं को सुविधा शुल्क दो और सुविधा प्राप्त करो और इस तरह की सुविधाएं तो लोग ढेसी साहब की सिफ़ारिश के बिना भी प्राप्त कर सकते हैं।

कानून में प्रावधान है कि कोई भी व्यक्ति किसी भी व्यक्ति को प्राधिकार पत्र- पॉवर ऑफ अटार्नी देकर हूडा सहित किसी भी विभाग में अपना काम कराने का संवैधानिक अधिकार रखता है। परंतु हूडा में यह अधिकार केवल तभी मान्य हो सकता है जब बाबुओं को नीचे से ऊपर तक पूरा चढ़ावा चढ़ जाए। यह चढ़ावा कभी कभी तो लाखों में हो सकता है। किसी व्यक्ति से हूडा ने कितना बकाया लेना या देना है, यह सब भी बाबुओं के रहमो-करम पर है। वे चाहें तो किसी के विरुद्ध 50 लाख की जगह 80 लाख की बकायेदारी निकाल दें तो उन्हें कोई पूछने वाला नहीं। हां यदि सेवा पानी हो जाए तो इस तरह की बदमाशी नहीं की जाएगी। सेवा पानी की बजाय यदि कोई ऊपर के साहबों को शिकायत करता है तो अव्वल तो कोई सुनाई होती नहीं, क्योंकि नीचे से ऊपर तक सब एक हैं। यदि ऊपर वाला साहब कोई भला आदमी मिल गया तो रकम तो ठीक हो जाएगी, लेकिन बदमाशी करने अथवा चक्कर में डालने वाले बाबू को तो कोई पूछ ही नहीं सकता। ढेसी साहब आए थे तो कम से कम दफ़्तर में बैठकर यह तो पूछ ही लेते ही ट्रांसफ़र परमीशन का क्या रेट है और उसे अदा न करने वाले की फाइन कितने महीनों तक रोके रहते हैं? कहने की जरूरत नहीं कि इतना खुला भ्रष्टाचार सरकार एवं उच्चाधिकारियों की स्वीकृति तथा हिस्सेदारी के बिना संभव नहीं।

सम्पदा अधिकारी का अंग्रेजी ज्ञान

कार्रवाई न करने के लिए उत्तरदायी कौन हैं? इस प्रश्न का उत्तर देने की साहब ने जरूरत ही नहीं समझी, क्योंकि वे तथा उन जैसे अन्य सभी लोग तो इसके दोषी हैं। उक्त पत्र की त्रुटियों पर सफाई के तौर पर साहब बहादुर कह सकते हैं कि क्लर्क से गलती हो गई होगी। यदि क्लर्क ने ही सब कुछ करना है तो फ़िर साहब को पालने की क्या जरूरत है? जिस किसी ने भी दसवीं जमात बिना नकल मारे पास कर रखी हो वह कभी ऐसी ग़लतियां नहीं कर सकता। इस पत्र से हूडा के क्लर्कों के ज्ञान का स्तर सामने आता है।

ईएसआई की एक्स-रे मशीन एक माह से खराब

जो मज़दूरों के वेतन से जबरी 1.75 फ़ीसदी काटती है और इसका दोगुणा कारखानेदारों से वसूलती है। पहली नवंबर से खराब पड़ी यह मशीन मात्र 30 वर्ष पुरानी है जो अक्सर खराब ही रहती है। विदित है कि गत 30 वर्षों में एक्स-रे विज्ञान में काफ़ी उन्नति हुई है और एक से एक बढ़िया व उन्नत तकनीक की मशीनें बाज़ार में आ चुकी हैं। इसी शहर में जगह-जगह लोग डिजिटल व अन्य आधुनिक मशीनें लगाये बैठे हैं, परंतु एक ईएसआई अस्पताल है जिसमें बाबा आदम के ज़माने की खटारा मशीन से जनता को बेवकूफ बनाया जा रहा है।

यह हाल तो तब है जब ईएसआई के (हरियाणा) कोष में 120 करोड़ रुपया सरप्लस पड़ा हुआ है और ईएसआई इसे खर्च करने को भी तैयार है, लेकिन खर्च करने का काम क्योंकि हरियाणा सरकार के श्रम विभाग का है, इसलिये खर्च हो नहीं पा रहा है। अब नये श्रममंत्री आये हैं। देखते हैं उन्हें कितनी फुर्सत मिलती है मज़दूरों की सुध लेने की।

सूचना

मज़दूर मोर्चा पाक्षिक समाचार पत्र

फरीदाबाद के पाठकों के लिए मजदूर मोर्चा अब हॉकरों के माध्यम से उपलब्ध है। जो भी हॉकर आपके यहां अखबार देने आता है, वह मांगने पर मज़दूर मोर्चा अवश्य देगा। डाक से अखबार पहुंचे या नहीं, इसका कोई ठिकाना न होने के कारण हमने यह नई व्यवस्था की है। अखबार मिलने में किसी तरह की समस्या होने पर हमारे प्रसार प्रबंधक से निम्न मोबाइल नंबर पर संपर्क करें :

दीक्षित न्यूज एजेंसी 9811159238

अब बल्लभगढ़ व पलवल के पाठक भी अपने हॉकर से मजदूर मोर्चा प्राप्त कर सकते हैं। किसी कठिनाई की स्थिति में संपर्क करें :

ललित कौशिक
शॉप नं.6, अंबेडकर चौक, बल्लबगढ़
मोब. 9278108329

भूटानी न्यूज़ एजेंसी
मीनार गेट, पलवल। मोब.: 09354112741, 09728382049